अनुक्रम

सन्नाटे का छंद	1
मेरी इतनी-सी बात सुनो	5
कहानीकार जैनेन्द्र कुमार : पुनर्विचार	9
उपन्यास की मौत : आपघर या बापघर	15
व्यंग्य से 'विद्रूप' की अभिव्यक्ति	19
उपन्यास के नाम पर	23
यादों के गलियारे से	28
जादू की सरकार	32
पाहीघर: स्वाधीनता आन्दोलन का दस्तावेज	36
बजे तो वंशी, गूंजे तो शंख	40
दर्दपुर : कश्मीर की 'दर्द' कथा	45
विष्णुकांत शास्त्री की 'तुलसी' दृष्टि	50
नलिन विलोचन शर्मा की 'शोध दृष्टि' का मूल्यांकन	59
नारी नियति की पहचान	64
बस्तर की कहानियाँ	71
स्त्री मुक्ति का नया पाठ	77
साहित्य-विवेक	84
नारी अस्मिता की पहचान-'मृगतृष्णा'	90

मेघवाहन:एक राष्ट्रीय रूपक 96

पतझर में टूटी पत्तियाँ 102

प्रतिघात: अनकहा इतिहास 107

ललमुनिया, घोंसला कहा बनाओगी 112

'जादुई यथार्थवाद' का गल्प 117

कथा का यूटोपिया 124

संस्मरण: हमने स्मृतियों के दीप जलाए 130

आलोचना के निकष पर दिनकर 136

हरे फूल की खुशबू 145

तुलसी के हिय हेरि : तुलसी साहित्य की सच्ची परख 149

कुहरे में युद्ध 158

आलोचना के प्रसंग में 164

पाहीघर 175

हिन्दी कहानी का परिदृश्य : परम्परा और प्रगति 180

उपन्यास : जीवन की चमकती किताब 187

प्रच्छन्न 192

आधुनिक हिंदी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि 197

उपन्यास के नाम पर 205

नारी नियति की पहचान 210

बजे तो वंशी, गूंजे तो शंख 217